50 साल बाद लौटेगी शोले की असली कहानी

ठाकुर के हाथों होगा गब्बर का अंत

नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे आइकॉनिक फिल्म शोले (1975) एक बार फिर सुर्खियों में है। इस बार वजह है इसका वो अंत जिसे दर्शकों ने कभी बड़े पर्दे पर नहीं देखा। दरअसल, जब निर्देशक रमेश सिप्पी ने फिल्म बनाई थी, तब उन्होंने चाहा था कि गब्बर सिंह (अमजद खान) को उसके अपराधों की सजा ठाकुर बलदेव सिंह (संजय कुमार) के हाथों मिले। लेकिन, उस दौर के डिस्ट्रीब्यूटर्स ने दबाव डालकर अंत बदलवाया और गब्बर को पुलिस के हवाले कर दिया गया। अब 50 साल बाद दर्शकों को फिल्म का वो असली और पहले से शूट किया गया क्लाइमैक्स देखने का मौका मिलेगा। ऑस्ट्रेलिया में होने वाले इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ सिडनी ने घोषणा की है कि इस साल का उनका सेंटरपीस फिल्म शोले का 4के रीस्टोर्ड वर्जन होगा। यह फेस्टिवल 9 से 11 अक्टूबर तक आयोजित होगा और इसमें वही अंत दिखाया जाएगा, जिसमें ठाकुर अपने परिवार का बदला लेकर गब्बर का अंत कर देता है। इस अनोखे प्रोजेक्ट को फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन और सिप्पी

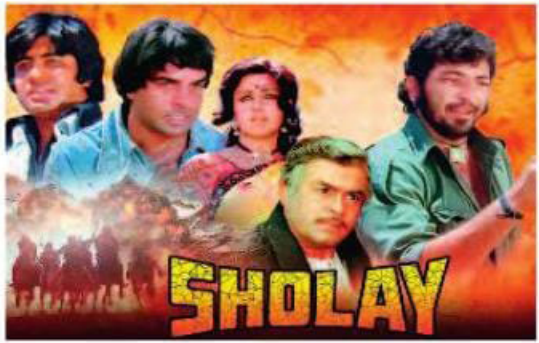

फिल्म्स ने संभव बनाया है। शोले अब अपनी मूल 70एमएम भव्यता में दर्शकों के सामने आएगी, जो सिनेमाई इतिहास का एक अनमोल अनुभव होगा। रीस्टोरेशन की प्रक्रिया में लंदन से दुर्लभ कलर रिवर्सल प्रिंट ढूंढा गया और मुंबई के एक गोदाम से कैमरा निगेटिव्स और लंबे समय से खोए हुए डिलीटेड सीन्स बरामद किए गए। शोले को भारतीय सिनेमा का माइलस्टोन माना जाता है। जय-वीरू की दोस्ती, ठाकुर की प्रतिशोध की आग और गब्बर सिंह की खलनायकी ने इसे एक कल्ट क्लासिक बना दिया।